

हरिभूमि रेवाड़ी न्यूज

तापमान



अधिकतम 28.5 डिग्री
न्यूनतम 3.5 डिग्री

रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

11 आईजीयू में दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का समापन

12 जौनल यूथ फेस्टिवल में आईजीयू मीरपुर बना ओवरऑल विजेता, केएलपी ने जीती रनरअप ट्राफी

शहर के सभी वार्डों में नहीं पहुंच रही कचरा कलेक्शन गाड़ियां

शहर के मुख्य मार्गों से कचरे का उठान नहीं, ग्रीन बेल्ट सहित कई मोहल्लों में लगे गंदगी के ढेर

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

स्वच्छता रैंकिंग में फिसलने के बाद से नगर परिषद टीम पूरी तरह लापरवाह हो चुकी है। नए अधिकारियों की ओर से शहर की सफाई व्यवस्था पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शहर की मुख्य सड़कों सहित कॉलोनीयों व मोहल्लों में जगह-जगह कचरे के ढेर नजर आ रहे हैं। डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन भी महज खानापूर्ति की जा रही है। सड़कों के

साथ डंपिंग स्टेशनों से भी कचरे का उठान समय पर नहीं किया जा रहा है। शहर के सचिवालय रोड, ट्रामा सेंटर के पास, बारा हजारी, जीवली बाजार, कोनसरवास रोड, बावल रोड व बाइपास की ग्रीन बेल्ट पर जगह-जगह कचरे के ढेर नजर आ रहे हैं। यहां तक की शहर के पार्कों में भी कचरे के ढेर लगे हुए हैं। ब्रास मार्केट के तिकोना पार्क का एक तरफ तो सुधाराकरण हो रहा है, वहीं अंदर गंदगी के ढेर लगे हुए हैं।

सड़कों पर डस्टबिन न होने से फैल रहा कचरा



ट्रामा सेंटर के पास डंपिंग यार्ड से सड़क पर फैला कचरा

सार्वजनिक शौचालयों की भी दशा बिगड़ी

नगर परिषद की ओर से शहर को स्वच्छ बनाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। शहर में एक भी जगह डस्टबिन नहीं है। सभी मार्गों पर जगह-जगह अनावश्यक कचरा प्लास्टिक बगल है, जहां हर समय गंदगी फैली रहती है। सफाई कर्मियों की कमी भी शहर की सबसे बड़ी समस्या है। शहर में वर्तमान में करीब 325 सफाई कर्मी हैं, जबकि आबादी के हिसाब से 600 से अधिक सफाई कर्मियों की जरूरत है। शहर के सभी सार्वजनिक शौचालयों की भी दशा बिगड़ चुकी है। शहर में बंद किए गए अनावश्यक कचरा प्लास्टिक फिर से एक्टिव हो चुके हैं। शहर में पिछले डेढ़ साल से एक भी डस्टबिन नहीं होने के कारण लोग सड़कों पर कचरा डाल रहे हैं।



रेवाड़ी। सचिवालय रोड पर राजीव चौक के पास फैला कचरा। फोटो: हरिभूमि

खबर संक्षेप

कोर्ट से घोषित पीओ मेजा गया जेल

रेवाड़ी। थाना मॉडल टाउन पुलिस ने कोर्ट से घोषित किए जा चुके एक पीओ को गिरफ्तार किया है। कोर्ट ने एक मामले में राजस्थान के कांकर निवासी सुंदर को पीओ घोषित किया था। उसके खिलाफ केस दर्ज करने के आदेश जारी किए गए थे। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर सुंदर के खिलाफ 27 अक्टूबर को केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद मौके से फरार हुए एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 3 अक्टूबर को हुए हादसे के बाद फरार वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस हादसे में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद जांच करते हुए राजस्थान के उत्तमखेड़ा निवासी बजरंग को गिरफ्तार कर लिया। बाद में आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

महिला से छेड़छाड़ का आरोपी गिरफ्तार

जाटूसाना। पुलिस ने क्षेत्र के एक गांव में महिला के साथ छेड़छाड़ करने के आरोपी को काबू कर लिया। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर गत 14 अक्टूबर को एक गांव निवासी अजय कुमार के खिलाफ केस दर्ज किया था। पीड़ित का मेडिकल भी कराया गया था। केस दर्ज होने के बाद से आरोपी पुलिस गिरफ्तार से बाहर चल रहा था। पुलिस ने आरोपी को काबू कर लिया। उसे मामले की तपतीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सट्टा खाईवाली करने का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने सट्टा खाईवाली करने के आरोपी में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि दालियावास निवासी सुधीर सार्वजनिक स्थान पर सट्टा खाईवाली कर रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने आरोपी को बोगस ग्राहक बनाकर काबू कर लिया। कब्जे में 1550 रुपये और सट्टा पंचिया बरामद की गई हैं। आरोपी के खिलाफ गैबलिंग एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है।

कोसली में श्री श्याम प्रभु खाट्टावाले का मंडारा आग कोसली।

कोसली। कोसली के सांविध्या सेवा मित्र मंडल की ओर से शनिवार रात्रि को रेलवे पार्क में श्री श्याम प्रभु खाट्टावाले के जागरण का आयोजन किया जाएगा। इससे पूर्व निशान यात्रा निकाली गई, जोकि नाहड़ रोड स्थित हनुमान मंदिर से शुरू होकर विश्वकर्मा कॉलोनी के श्याम मंदिर में पहुंची। जागरण में भजन गायक कलाकार साहिल शर्मा पानीपत, बाल किशन शर्मा रेवाड़ी, मपक नारनौल, प्राची ठाकुर दिल्ली व राजेश कोसली श्री श्याम बाबा की महिमा का गुणगान किया।

इस सीजन की सबसे ठंडी रही शुक्रवार की रात, बरसात की संभावना नहीं होने से सूखी ठंड करेगी परेशान कड़ाके की ठंड के संकेत दे रहा पारा, रात के तापमान में गिरावट

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

मौसम के कदम तेजी से कड़ाके की ठंड की ओर बढ़ने लगे हैं। रात के तापमान में लगातार गिरावट आने से पारा जमाव बिंदु से साढ़े 3 डिग्री सेल्सियस दूर है। दिन का तापमान भी सामान्य से कम चल रहा है, जिससे इस बार कड़ाके की ठंड समय से पहले शुरू हो रही है। अगर तापमान इसी तेजी से गिरता रहा, तो आने वाले सप्ताह में लोगों को जबरदस्त ठिठुरन का सामना करना पड़ेगा। बरसात के आसर नजर नहीं आ रहे, जिस कारण सूखी ठंड परेशान करेगी। पहाड़ी

इलाकों की बर्फबारी का असर मैदानी इलाकों में देखने को मिल रहा है, जिससे ठंड का प्रकोप शुरू होने लगा है। शनिवार को सुबह से ही आसमान साफ बना रहा। तेज धूप निकलने के बाद लोगों को सुबह की सर्दी से राहत मिल गई। शाम तक चमकदार धूप खिली रही। अधिकतम तापमान 28.5 डिग्री पर स्थिर रहा। रात का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के साथ 3.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। गत वर्ष की तुलना में दिन-रात के तापमान सामान्य से काफी नीचे आ चुके हैं। बीते साल 8



रेवाड़ी। एक खेत में बढ़ रही सरसों की फसल। फोटो: हरिभूमि

नवंबर को अधिकतम तापमान 33.5 डिग्री और न्यूनतम तापमान 16.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। नवंबर के अंत तक लोगों को भारी ठंड का सामना नहीं करना पड़ा था।

समय पर ठंड शुरू होने के कारण सरसों की फसल का तेजी से विकास हो रहा है। अनेकों सरसों जमीन से बाहर आ चुकी है। मौसम विभाग के अनुसार लगभग एक सप्ताह तक मौसम साफ बना रह सकता है। अभी बारिश की कोई संभावना नहीं है। गेहूं की बिजाई के लिए भी मौसम अनुकूल हो चुका है। किसान गेहूं की बिजाई कर रहे हैं। बारिश नहीं होने के कारण किसानों ने अनेकों सरसों की सिंचाई भी शुरू कर दी है। मौसम ठंडा होने के बावजूद एक्वआई में सुधार आने लगा है। शनिवार को धारूहेड़ा का एक्वआई 150 के आसपास आ गया। अगर हवा में नमी और तापमान में कमी आती है, तो प्रदूषण का स्तर एक बार फिर से बढ़ सकता है।

सरसों की फसल का तेजी से विकास

इस बार दिवाली के बाद से मौसम ठंडा बना हुआ है। दिन और रात के तापमान सामान्य से कम बन गए हैं। पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी शुरू होने के कारण मैदानी इलाकों में सरद हवाएं चलने लगी हैं। हवाओं की गति 13 किलोमीटर प्रति घंटा से भी अधिक बनी रहने के कारण लोगों को ठंड का अहसास होने शुरू हो गया है। बाजार में गर्म कपड़ों की डिमांड बढ़ने से दुकानदारों के चेहरों पर चमक आ रही है।

डिपोर्ट के लिए 44 बांग्लादेशी हावड़ा रवाना आज बीएसएफ के हवाले किए जाएंगे आरोपी

रेवाड़ी। गत दिनों अवैध रूप से रहने वाली 44 बांग्लादेशी नागरिकों को डिपोर्ट करने के लिए शनिवार देर सायं पुलिस की एक बस हावड़ा के लिए रवाना हो गई। कोर्ट से अंडरगोन किए गए इन विदेशी नागरिकों को संभवतया रविवार को सीमा सुरक्षा बलों के हवाले किया जाएगा, ताकि उन्हें वापस बांग्लादेश भेजा सके। पुलिस खीते दिनों अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी और रोहिंग्या नागरिकों की पहचान करने के लिए पुलिस ने बड़े स्तर पर सच अभियान चलाया था। खुफिया विभाग की टीम ने भी इस कार्य में अपना योगदान दिया था। रईट भट्टों और झुंजियों में अवैध रूप से रह रहे 44 विदेशी नागरिकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उनके खिलाफ केस दर्ज करने के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया गया था। कोर्ट ने सभी आरोपियों को अंडरगोन किया था। इसके बाद इन्हें पुलिस लाइन में रखा हुआ था। रविवार को पुलिस की एक बस से इन नागरिकों को हावड़ा के लिए रवाना कर दिया गया। उहां उन्हें बीएसएफ के हवाले किया जाएगा। बीएसएफ इन नागरिकों को उनके देश भेजने की व्यवस्था करेगी।

महिलाएं व बच्चे भी इनमें शामिल

डिपोर्ट किए जाने वाले नागरिकों में 15 पुरुष, 12 महिला व 17 बच्चे शामिल हैं। इनमें से कई बांग्लादेशी नागरिक दलालों के मार्फत वर्षों पूर्व सीमा पार करके आए थे। इसके बाद अधिकांश बांग्लादेशी नागरिकों को बस में बैठाते हुए पुलिस। अवैध रूप से रईट भट्टों पर मजदूरी कर रहे थे। जांच के दौरान कुछ नागरिकों के आधार कार्ड भी फर्जी पाए गए थे।



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में आरोपी मैनेजर।

था। पुलिस ने बोगस ग्राहक बनाकर इस कार्रवाई को अंजाम दिया था।

देह व्यापार मामले में काबू मैनेजर को भेजा जेल

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर कसोला चौक के पास शुरुवार देर सायं स्या सेंटर की आड़ में चल रहे देह व्यापार के धंधे का भंडाफोड़ करते हुए काबू किए गए मैनेजर को पुलिस ने कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। पुलिस ने डीएसपी रविंद्र कुमार की अगुवाई में होटल में चल रहे स्या सेंटर पर रेड की थी। रेड के दौरान 9 युवतियों व दो युवकों को हिरासत में लिया गया



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में आरोपी मैनेजर।

था। पुलिस ने बोगस ग्राहक बनाकर इस कार्रवाई को अंजाम दिया था।

अन्य स्या सेंटरों पर पुलिस की नजर

स्या सेंटरों की आड़ में देह व्यापार का धंधा तेजी से चल रहा है। नेशनल हाइवे के हंस रिसेट में चल रहे स्या सेंटर में देह व्यापार की शिकायतें पुलिस को मिल रही थीं। इसके बाद पुलिस ने अपने सूत्रों से पुख्ता जानकारी हासिल की। अपने ही एक कर्मचारी को बोगस ग्राहक बनाकर भेजा। तो मामले का भंडाफोड़ हो गया। एस्प्री हेमैंड कुमार मीणा ने बताया कि पुलिस ऐसे स्या सेंटरों का पता लगा रही है, जहां इस तरह का धंधा होता है। अनैतिक कार्य करने वालों की किसी भी सूत्र में बख्शा नहीं जाएगी।

पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश कर रही

मामले में स्या सेंटर की आड़ में धंधा कराने के मामले में पुलिस ने राजस्थान के रायसिंहपुर निवासी मैनेजर अमरसिंह को गिरफ्तार किया था, जबकि मालिक मोहाइल फोन बंद करने के बाद फरार हो गया था। पुलिस ने शनिवार को अमरसिंह को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे ब्याधिक अभिरक्षण के तहत जेल भेज दिया गया। पुलिस मामले से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है।



रेवाड़ी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय गीत गाते हुए विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय गीत से दिया देश की एकता का कोसली।

आरपीएस स्कूल कोसली में वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय प्राचार्य ने वंदे मातरम के इतिहास, इसके रचयिता बंकिम चन्द्र के योगदान तथा स्वतंत्रता संग्राम में इस गीत के महत्व पर प्रकाश डाला। विद्यार्थियों ने वंदे मातरम की भावना को समर्पित देशभक्ति गीत, नृत्य और भाषण प्रस्तुत किए। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को इस अवसर पर देश की एकता, अखंडता और गौरव को बनाए रखने का संदेश दिया। प्राचार्य ने विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि वंदे मातरम केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत माता के प्रति समर्पण और गौरव का प्रतीक है।

आर्मी के जवान व परिजनों पर हमला पुलिस पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

जम्मू-कश्मीर के गुरगर्ग बरामूला में तैनात भारतीय सेना के जवान बाहका निवासी नायक गजेंद्र सिंह और उसके परिजनों पर गांव के कुछ लोगों ने जमीनी विवाद के चलते हमला कर दिया। जवान को आर्मी अस्पताल दिल्ली रेफर किया गया है, जबकि उसके माता-पिता को पीजीआई रोहतक भेजा गया है। आरोप है कि जवान की पत्नी ने पुलिस को शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन पुलिस ने मामले में कोई कार्रवाई नहीं की। जवान के परिवार को सुरक्षा मुहैया कराने के लिए राजपुताना राइफल्स के कंपनी कमांडर ने भी प्रदेश के डीजीपी को अक्टूबर माह में पत्र लिखा था। इसके बावजूद पुलिस ने परिवार की सुरक्षा के लिए कोई कदम नहीं उठाए। बाहका निवासी गजेंद्र सिंह राजपुताना राइफल्स में जम्मू-कश्मीर के गुलाम बरामूला सेक्टर में तैनात हैं।

दूसरे पक्ष के लोग भी झगड़े में घायल

गजेंद्र का पुस्तैनी जमीन को लेकर अपने ही परिवार के लोगों से काफी समय से विवाद चल आ रहा है। उनके अवकाश पर आने के बाद दोनों पक्षों के बीच झगड़ा हो गया। दोनों पक्षों के लोग एक-दूसरे पर पहले हमला करने के आरोप लगा रहे हैं। दोनों ही पक्षों के कई लोगों को झगड़े में चोट आई है। दूसरे पक्ष के लोग भी अस्पताल में उपचारार्थ हैं। एस्पएओ गजराज सिंह ने बताया कि पारिवारिक विवाद पुस्तैनी जमीन को लेकर चल रहा है। दोनों पक्षों की ओर से कई बार शिकायत दर्ज कराई जा चुकी है। पुलिस ने नियमानुसार कार्रवाई भी की है। अब मैडिको लैगल रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

माता-पिता को पीजीआई रोहतक रेफर किया

उनके कंपनी कमांडर की ओर से अक्टूबर माह में डीजीपी हरियाणा को पत्र लिखकर बताया गया था कि गांव में जमीनी विवाद के चलते गजेंद्र कुमार के परिजनों को गांव के कुछ लोगों से खतरा है। गजेंद्र कुमार तनावग्रस्त परिजनों से खतरा है, जिस कारण वह मामले को निपटाने के लिए नहीं पहुंच सकता। कंपनी कमांडर ने उसके परिजनों को पुलिस सुरक्षा मुहैया कराने का आग्रह किया था। अब गजेंद्र कुमार छुट्टी लेकर अपने घर आया हुआ था। उसने आरोप लगाया कि उस पर व उसके परिवार के अन्य सदस्यों ने हमला कर दिया। उसे व उसके माता-पिता को गंभीर चोट आई है। ट्रामा सेंटर से गजेंद्र को आर्मी अस्पताल रेफर कर दिया गया, जबकि उसके माता-पिता को पीजीआई रोहतक रेफर किया गया है। इस मामले में दूसरे पक्ष के लोगों को भी झगड़े में काफी चोट आई है, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में दाखिल कराया गया है। दूसरे पक्ष के लोगों ने भी जवान पर पहले हमला करने के आरोप लगाए हैं।



रेवाड़ी। शैक्षणिक भ्रमण के दौरान शिक्षक व विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

राज इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों ने मोजीलैंड का किया भ्रमण

रेवाड़ी। राज इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा सातवीं और आठवीं के विद्यार्थियों को सोनीपत स्थित मोजीलैंड का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। यात्रा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में टीमवर्क, जिज्ञासा और बाहरी भ्रमण में सहयोग को बढ़ावा देना था। इस दौरान छात्रों ने नए अनुभव सीखे और स्नो पार्क, एडवेंचर पार्क और मनोरंजन पार्क में जमकर मस्ती की। शिक्षकों ने भी इस यात्रा में सक्रिय रूप से भाग लिया और छात्रों का मार्गदर्शन किया। स्कूल निदेशक नवीन सैनी ने कहा कि इस प्रकार के भ्रमण से शिक्षक के साथ-साथ छात्रों के अंदर कुछ नया विकसित करने के भाव होते हैं। यात्रा के दौरान, बच्चों ने अपने उत्साह और आनंदपूर्वक के साथ-साथ अनुशासन का पालन भी किया।

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, आपको ग्रोथ ऑप्शन और डिविडेंड ऑप्शन में से एक का चयन करना होता है। ये दोनों ऑप्शन आपके निवेश के उद्देश्य और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं।

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ या डिविडेंड ऑप्शन में से बेहतर क्या और क्यों?

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

निवेशकों के लिए क्या रहेगा फायदे का सौदा ग्रोथ और डिविडेंड किसमें मिलेगा ज्यादा फायदा, फैसला गलत हो जाए तो कैसे रिस्क करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय कई बार निवेशकों को यह कनफ्यूजन हो सकता है कि किसी स्कीम का ग्रोथ ऑप्शन चुनें या डिविडेंड ऑप्शन बेहतर रहेगा? सही ऑप्शन का चुनाव आपके रिटर्न को बढ़ा सकता है, जबकि गलत सेलेक्शन से आपका मुनाफा घट सकता है। यही वजह है कि समझदारी से लिया गया फैसला आपके इनवेस्टमेंट की ग्रोथ को कई गुना बढ़ा सकता है। आमतौर पर ग्रोथ विकल्प बेहतर होता है, क्योंकि यह लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज के कारण अधिक धन बनाता है, जबकि डिविडेंड विकल्प उन निवेशकों के लिए बेहतर है जो नियमित आय चाहते हैं। ग्रोथ में, फंड लाभ को फिर से निवेश करता है, जिससे निवेश का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, जबकि डिविडेंड में, फंड आय वितरित करता है, जिससे चक्रवृद्धि ब्याज का प्रभाव कम हो जाता है। आइए इस रिटर्न में जानते हैं दोनों ऑप्शंस का फर्क, फायदे और रिस्क करने के नियम।

ग्रोथ ऑप्शन के फायदे

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ ऑप्शन में आपके निवेश पर जो भी मुनाफा बनता है, वो आपको कैश में नहीं दिया जाता है, बल्कि, वह पैसा दोबारा उसी म्यूचुअल फंड फिंड से इनवेस्ट कर दिया जाता है। इसका फायदा यह होता है कि आपके मुनाफे पर भी मुनाफा जुड़ने लगता है, जिससे कंपाउंडिंग का बनिफिट मिलता है। समय के साथ कंपाउंडिंग की यह ताकत आपकी पूंजी को तेजी से बढ़ाने में मदद करती है। यही वजह है कि ग्रोथ ऑप्शन में फंड की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी ज्यादा तेजी से बढ़ती है।

डिविडेंड ऑप्शन क्या है

पहले जिसे डिविडेंड ऑप्शन कहा जाता था, उसे अब 'इनकम डिस्ट्रीब्यूशन कम कैपिटल विड्रॉल' ऑप्शन यानी आईडीसीडब्ल्यू का नाम दे दिया गया है। इसमें फंड से मिलने वाला मुनाफा समय-समय पर निवेशकों में बांट दिया जाता है। हालांकि पेआउट की यह फ्रीक्वेंसी फिक्स नहीं होती, लेकिन जब भी ऐसा भुगतान किया जाता है, फंड की एनएवी घट जाती है। इसका मतलब है कि लंबे समय में आपकी पूंजी उतनी तेजी से नहीं बढ़ पाती जितनी ग्रोथ ऑप्शन में बढ़ सकती है। सेबी ने डिविडेंड ऑप्शन का नाम बदलकर आईडीसीडब्ल्यू इसलिए रखा, ताकि निवेशकों को यह समझ में आए कि इस पेआउट में कुछ हिस्सा आपकी अपनी पूंजी से निकलता है, यह कोई गारंटीड इनकम जैसा



विकल्प नहीं है।

कौन सा विकल्प सही

ग्रोथ और डिविडेंड ऑप्शन में आपके लिए कौन सा विकल्प सही है, यह पूरी तरह आपके आर्थिक लक्ष्य और निवेश के मकसद से तय होता है। अगर आप रिटायर्ड हैं या किसी वजह से रेगुलर इनकम (आपके लिए जरूरी है, तो आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन आपके लिए बेहतर हो सकता है, लेकिन अगर आप लंबी अवधि के लिए पैसे लगा रहे हैं और

चाहते हैं कि आपका पैसा लगातार बढ़ता रहे, तो ग्रोथ ऑप्शन सही रहेगा। लंबे समय में देखा जाए तो ग्रोथ ऑप्शन आमतौर पर बेहतर रिटर्न देता है, क्योंकि इसमें कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। वहीं, आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन उन निवेशकों के लिए है जो समय-समय पर पैसा निकालना चाहते हैं और रेगुलर इनकम चाहते हैं।

गलत विकल्प चुन लिया हो तो क्या करें?

म्यूचुअल फंड में सही ऑप्शन चुनना उतना ही जरूरी है

जितना सही फंड चुनना, दोनों की अपनी-अपनी खूबियां और सीमाएं हैं।

कई निवेशक शुरुआत में रेगुलर इनकम पाने के लिए या किसी कनफ्यूजन की वजह से आईडीसीडब्ल्यू चुन लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें महसूस होता है कि अगर उनका पूरा मुनाफा फंड में ही दोबारा निवेश होता, तो लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिल सकता था। ऐसा होने पर निवेशक अपने पैसों को ग्रोथ ऑप्शन में रिस्क कर सकते हैं, लेकिन उससे पहले म्यूचुअल फंड पर लागू होने वाले टैक्स के नियमों और एग्जिट लोड के असर को समझना जरूरी है।

आईडीसीडब्ल्यू से ग्रोथ ऑप्शन में कैसे रिस्क करें

अगर आप अपने म्यूचुअल फंड इनवेस्टमेंट को डिविडेंड या आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन से ग्रोथ ऑप्शन में रिस्क करना चाहते हैं, तो इसके लिए एक फॉर्म भरना होता है। फंड स्विचिंग की यह प्रॉसेस आमतौर पर 24 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन याद रखें कि इस तरह का रिस्क रिटैम्पशन और नई खरीदारी दोनों ही माना जाता है। इसका मतलब है कि आपको यूनिट होल्ड करने की अवधि के हिसाब से एग्जिट लोड और कैपिटल गेस टैक्स देना पड़ सकता है। इसलिए फैसला करने से पहले पूरी टैक्स देनदारी को जरूर समझ लें।

निवेश का उद्देश्य लंबी अवधि के लिए पूंजी की वृद्धि

डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है, बल्कि इसे फंड में पुनर्निवेश किया जाता है।

निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि होती है, जिससे आपका मूल निवेश बढ़ता है।

कर लाभ : ग्रोथ ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है।



समझदारी

बिजनेस डेस्क

डिविडेंड ऑप्शन

► निवेश का उद्देश्य : नियमित आय प्राप्त करना।

► डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान किया जाता है, जिससे आपको नियमित आय मिलती है।

► निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि कम होती है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

► कर लाभ : डिविडेंड ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ नहीं मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

► लंबी अवधि के निवेशक : यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं

और पूंजी की वृद्धि करना चाहते हैं।

► नियमित आय की आवश्यकता नहीं : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता नहीं है और आप अपने निवेश को बढ़ाना चाहते हैं।

► कब डिविडेंड ऑप्शन चुने

► नियमित आय की आवश्यकता : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता है और आप अपने निवेश से आय प्राप्त करना चाहते हैं।

► अल्पकालिक निवेशक : यदि आप अल्पकालिक निवेश करना चाहते हैं और नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

गलत फंड चुनने से बचना चाहते हैं तो निवेश से पहले जान लें ये टिप्स

- बाजार में मौजूद 250 से ज्यादा ईटीएफ में से अपने लिए सही फंड चुनना आसान नहीं
- लक्ष्य और कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो सही फंड में निवेश करना आसान हो जाएगा

जानकारी

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। वजह साफ है। ईटीएफ बेहद कम खर्च में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने का मौका देते हैं। इसके साथ ही उन्हें एक्सचेंज पर जाकर स्टॉक्स की तरह आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है, लेकिन बाजार में 250 से ज्यादा ईटीएफ मौजूद हैं। ऐसे में अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती हो सकता है। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका आपके रिटर्न पर बुरा असर पड़ सकता है। अगर आप अपने निवेश के लिए सही ईटीएफ चुनना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ ऐसे ही टिप्स जो आपको सही फंड चुनने में मदद करेंगे।

आपका ईटीएफ किस इंडेक्स को ट्रेक करता है

हर ईटीएफ किसी न किसी इंडेक्स को ट्रेक करता है। यानी आप इनडायरेक्ट तौर पर उस इंडेक्स में शामिल कंपनियों या एसेट्स में निवेश कर रहे होते हैं। मसलान, अगर आपका ईटीएफ निफ्टी 50 या सेसेक्स को फॉलो करता है, तो आप उनके जरिये देश की टॉप कंपनियों की हिस्सेदारी खरीद रहे होते हैं। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आपका चुना हुआ ईटीएफ किस इंडेक्स से जुड़ा है और क्या वह आपके निवेश के उद्देश्य से मेल खाता है। यानी इंडेक्स का चुनाव लंबे समय में बेहतर रिटर्न की दिशा तय करता है।

ट्रेकिंग एरर पर एरिबल खास नजर

हर ईटीएफ कोशिश करता है कि वह अपने बेंचमार्क इंडेक्स को हूबहू फॉलो करे, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं होता। इस छोटे फर्क को ही ट्रेकिंग एरर कहा जाता है। अगर यह एरर कम है, तो ईटीएफ अपने



इंडेक्स के रिटर्न से काफी हद तक मेल खाता है। वहीं, अगर ट्रेकिंग एरर ज्यादा है, तो आपके रिटर्न उम्मीद से कम हो सकते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे ईटीएफ को चुनना बेहतर रहता है, जिसका ट्रेकिंग एरर कम से कम हो।

लिविडिटी यानी खरीदना-बेचना कितना आसान

निवेश का मकसद सिर्फ रिटर्न पाना नहीं होता, बल्कि आपके पास जरूरत पड़ने पर पैसा निकालने की बेहतर सुविधा होनी भी जरूरी है। इसलिए ईटीएफ की लिविडिटी बेहद अहम होती है। अगर किसी ईटीएफ में रोजाना अच्छा कारोबार होता है, यानी खरीदने और बेचने वालों की संख्या काफी है, तो उसे कमी भी बेचना आसान रहेगा, लेकिन अगर फंड का ट्रेडिंग वॉल्यूम कम है, तो आपको जरूरत पड़ने पर कम समय में अपनी यूनिट्स बेचने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। हमेशा ऐसे ईटीएफ का चुनाव करें जिसे जरूरत पड़ने पर आसानी से खरीदा या बेचा जा सके।

ईटीएफ के प्राइस और एनएवी में

फर्क को समझें

ईटीएफ की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) यह बताती है कि उसमें शामिल एसेट्स का मौजूदा मूल्य कितना है। आम तौर पर ईटीएफ का मार्केट प्राइस उसके एनएवी के आसपास होना चाहिए, लेकिन कई बार मार्केट प्राइस इससे काफी ऊपर या नीचे भी ट्रेड करता है। अगर ईटीएफ का प्राइस उसकी एनएवी से काफी ज्यादा है, तो आप जरूरत से ज्यादा पैसे चुका रहे हैं। इसलिए निवेश से पहले हमेशा देखें कि ईटीएफ की कीमत उसकी एनएवी के करीब हो, ताकि आपका पैसा सही वैल्यू पर निवेश किया जा सके।

एक्सपेंस रेशियो पर ध्यान देना न भूलें

हर ईटीएफ को चलाने के लिए मैनेजमेंट कॉस्ट लगती है, जिसे एक्सपेंस रेशियो कहा जाता है। इसका आंकड़ा पहली नजर में भले ही बेहद छोटा लगे, लेकिन लंबे समय में यह आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ईटीएफ का एक्सपेंस रेशियो 0.05% है और दूसरे का 0.10%, तो शुरुआत में फर्क छोटा दिखेगा,



अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका रिटर्न पर बुरा असर पड़ेगा

ईटीएफ की विशेषताएं

1. **ट्रेडेबिलिटी** : ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
2. **डाइवर्सिफिकेशन** : ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर, बॉन्ड, या अन्य सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
3. **लो कॉस्ट** : ईटीएफ की फीस आम तौर पर म्यूचुअल फंड की तुलना में कम होती है।
4. **ट्रांसपैरेंसी** : ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के प्रकार

1. **इविटटी ईटीएफ** : ये ईटीएफ शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
2. **बॉन्ड ईटीएफ** : ये ईटीएफ बॉन्ड में निवेश करते हैं।
3. **सेक्टरल ईटीएफ** : ये ईटीएफ विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।
4. **इंटरनेशनल ईटीएफ** : ये ईटीएफ विदेशी शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
5. **गोल्ड ईटीएफ** : ये ईटीएफ सोने में निवेश करते हैं।

ईटीएफ के लाभ

1. **डाइवर्सिफिकेशन** : ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर या सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
2. **लो कॉस्ट** : ईटीएफ की फीस आम तौर पर कम होती है।
3. **ट्रेडेबिलिटी** : ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
4. **ट्रांसपैरेंसी** : ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के जोखिम

1. **मार्केट जोखिम** : ईटीएफ के मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है।
2. **लिविडिटी जोखिम** : ईटीएफ की लिविडिटी कम हो सकती है।
3. **ट्रेकिंग एरर** : ईटीएफ का प्रदर्शन उसके इंडेक्स के प्रदर्शन से भिन्न हो सकता है।

आय का मुख्य स्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी तो यह सही कदम

कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी लोन इश्योरेंस बेचते हैं

एजेंट की बातों से न हों कनफ्यूज, लोन का इश्योरेंस का कदम सही या गलत ऐसे समझें

सलाह

बिजनेस डेस्क

जब आप कोई लोन लेते हैं, तो बैंक या एजेंट अक्सर लोन इश्योरेंस लेने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या वाकई इसकी जरूरत होती है? हर स्थिति में नहीं। लोन इश्योरेंस समझदारी का कदम तब है जब आपकी आय का मुख्य स्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी है, लेकिन कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी इसे बेचते हैं। इसलिए आप एजेंट की बातों के कनफ्यूज न हों और अपने लिए सही विकल्प चुनें। तभी आप लोन लेकर खुद को सुरक्षित कर सकते हैं, वरना कई यह आपके गले की फांस भी बन सकता है। अक्सर जब आप बैंक या एनबीएफसी से पर्सनल लोन, होम लोन या कार लोन लेने जाते हैं, तो एजेंट आपको एक और प्रोडक्ट बेचने की कोशिश करता है- लोन इश्योरेंस वह कहता है कि अगर किसी वजह से आप लोन नहीं चुका पाए तो यह इश्योरेंस आपकी ईएमआई भर देगा या आपके परिवार पर बोझ नहीं डालेगा। पहली नजर में यह बात सही लगती है, लेकिन असल में हर बार लोन इश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होता है। कई बार यह सिर्फ बैंक या एजेंट का कमीशन कमाने का तरीका होता है। इसलिए बिना समझे इश्योरेंस खरीदना नुकसानदायक हो सकता है।

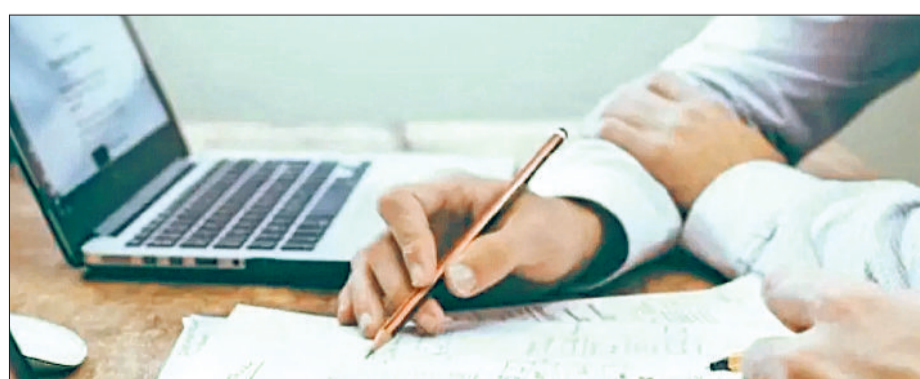
लोन इश्योरेंस होता क्या है?

लोन इश्योरेंस एक ऐसी पॉलिसी होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि अगर किसी वजह से लोन लेने वाला व्यक्ति ईएमआई नहीं भर पाता, तो इश्योरेंस कंपनी बाकी ईएमआई का भुगतान करेगी। इसका मकसद बैंक या लेंडर को डिफॉल्ट रिस्क से बचाना होता है, लेकिन ध्यान दीजिए कि यह सुरक्षा आपके परिवार के लिए नहीं, बल्कि बैंक के लिए होती है। यानी बैंक को तो उसका पैसा मिल जाता है, पर आपके परिवार को सीधा फायदा नहीं होता।

कब जरूरी है लोन इश्योरेंस?

हर लोन के साथ इश्योरेंस जरूरी नहीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों में यह समझदारी भरा कदम हो सकता है।

1. **होम लोन या बड़ी रकम वाला लोन** : अगर आपने लंबी अवधि के लिए होम लोन या बिजनेस लोन लिया है, तो इश्योरेंस आपके और परिवार को राहत दे सकता है।
2. **अगर आप सोल बेडविनर हैं** : अगर परिवार में कमाने वाले आप ही हैं और किसी कारणवश



आपकी मृत्यु हो जाए या नौकरी छूट जाए, तो यह पॉलिसी बाकी लोन चुका सकती है।

3. **अगर आपका प्रोफेशन रिस्क है** : जो लोग खतरनाक कामों में हैं या फिर मेडिकल इंडस्ट्री में हैं, तो उनके लिए यह इश्योरेंस जरूरी है।

कब नहीं लेना चाहिए लोन इश्योरेंस? कई बार बैंक या एजेंट आपको डर दिखाकर यह पॉलिसी थमा देते हैं, लेकिन हर केस में इसकी जरूरत नहीं होती।

1. **अगर आपके पास लाइफ इश्योरेंस पहले से है** :

अगर आपके पास पर्याप्त टर्म इश्योरेंस है, तो अलग से लोन इश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं है। आपका टर्म प्लान परिवार को पूरी सुरक्षा देता है।

2. **अगर लोन छोटी अवधि का है** : जैसे पर्सनल लोन 1-2 साल के लिए हो या कार लोन बहुत छोटी रकम का हो, तो उस पर इश्योरेंस का प्रीमियम देना बेकार है।
3. **अगर ईएमआई आपकी इनकम का छोटा हिस्सा है** : जब ईएमआई आपकी इनकम का सिर्फ 10-15% हो, तो अतिरिक्त इश्योरेंस का खर्च आपकी जेब पर बोझ बन सकता है।

एजेंट से कनफ्यूज ना हों

एजेंट या बैंक अधिकारी कई बार कहते हैं कि बिना इश्योरेंस लोन अप्रुव नहीं होगा, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। आरबीआई और इरडा दोनों ने साफ किया है कि लोन इश्योरेंस कमी भी अनिवार्य नहीं होता। अक्सर ग्राहक कनफ्यूज होकर पॉलिसी ले लेता है, जो बाद में बेकार साबित होती है।

कितना होता है लोन इश्योरेंस का प्रीमियम?

अगर आप 10 लाख रुपये का लोन करीब 5 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपकी 10-12 हजार रुपये का इश्योरेंस प्रीमियम लग सकता है। यह प्रीमियम कम-ज्यादा हो सकता है और आप इस पर बारगर्निंग भी कर सकते हैं। यह प्रीमियम या तो आपसे एकमुश्त लिया जाता है या लोन राशि में जोड़ दिया जाता है। मतलब, कुछ मामलों में आप उसके ऊपर भी ब्याज चुकाते हैं।

क्या लोन इश्योरेंस टैक्स बेनिफिट देता है?

कुछ लोन इश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स बेनिफिट मिल सकता है, लेकिन यह इश्योरेंस के प्रकार पर निर्भर करता है। अगर पॉलिसी लाइफ इश्योरेंस कैटेगरी में आती है, तो सेवशन 80सी के तहत छूट मिल सकती है, लेकिन अगर यह केवल क्रेडिट प्रोटेक्शन पॉलिसी है, तो टैक्स बेनिफिट नहीं मिलता।

सही निर्णय कैसे लें?

1. **तुलना करें** : विभिन्न इश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम और कवरेज की तुलना करें।
2. **एजेंट की बातों पर आंख मूंदकर मरोचना न करें** : हर सलाह के पीछे कमीशन छिपा हो सकता है।
3. **अपनी जरूरत देखें** : अगर आपका लोन छोटा है या पहले से टर्म इश्योरेंस है, तो अतिरिक्त इश्योरेंस की जरूरत नहीं।
4. **पॉलिसी डॉक्यूमेंट पढ़ें** : साइन करने से पहले उसके सभी क्लॉजर्स को जरूर समझें। यानी किन परिस्थितियों में क्लेम नहीं मिलेगा।

लोन इश्योरेंस एक अच्छा सेप्टी नेट

लोन इश्योरेंस एक अच्छा सेप्टी नेट है, लेकिन हर किसी के लिए जरूरी नहीं। अगर आपके ऊपर बड़ा लोन है, परिवार पर निर्भर है या आपकी हेल्थ रिस्क है, तो इसे लेना समझदारी है, लेकिन अगर आपका लोन छोटा है, ईएमआई कंट्रोल में है और टर्म इश्योरेंस पहले से है, तो एजेंट की बातों में आकर इश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं। हमेशा याद रखें कि लोन इश्योरेंस बैंक के लिए सुरक्षा है, आपके लिए नहीं।

खबर संक्षेप

वंदे मातरम की वर्षगांठ पर समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज में मानविकी विभाग की ओर से राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ का भावपूर्ण समारोह आयोजित किया गया। कॉलेज परिसर देशभक्ति के रंग में रंग गया। कार्यक्रम में निदेशक डॉ. महेश यादव, कुलसचिव डॉ. देवेंद्र यादव, अधिष्ठाता डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. राजेश डगार, भूपेंद्र, डॉ. अशोक व डॉ. हिमांशु उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत सुबह 10 बजे कॉलेज के ऑडिटोरियम में हुई। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को देश के गौरवशाली इतिहास और राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के महत्व से अवगत कराना था।

विद्या भारती स्कूल में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में शनिवार को अध्यापक-अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव, वाइस चेयरपर्सन डॉ. ऊषा यादव, प्रबंध निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव, निदेशक डॉ. रविन्द्र यादव, उप प्राचार्य सपना मल्होत्रा, किड्स ब्लॉक इंचार्ज विजय सोनी, कोर्डिनेटर धर्मवीर तथा भावेश गोयल सहित सभी अध्यापकगण उपस्थित थे।

सूरज स्कूल में हैप्पी क्लासरूम पर कार्यशाला

महेंद्रगढ़। सूरज स्कूल नारनौल में शिक्षकों के लिए हैप्पी क्लासरूम विषय पर ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रिसोर्सपर्सन नीलू जावला व डॉ. तरंग गोड ने शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण तकनीकों व कक्षा संचालन की आधुनिक विधियों की जानकारी दी। कार्यशाला का शुभारंभ प्रधानाचार्या ऋतु चहल की उपस्थिति में किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि एक कुशल शिक्षक वही होता है, जो कक्षा को न अनुशासित रख सके, बल्कि बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए।

आरपीएस कॉलेज शतरंज में दूसरे स्थान पर

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज बालाना की शतरंज टीम ने हाल ही में आयोजित इंटर कॉलेज शतरंज प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान हासिल किया है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी की ओर से आयोजित की गई, जिसमें टीम खिलाड़ी हर्ष, अर्पित, नितिन, लवकी ने असाधारण रणनीतिक कौशल और मानसिक दृढ़ता का प्रदर्शन किया तथा फाइनल तक का सफर तय किया। इस शानदार उपलब्धि पर कॉलेज के चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव व सीईओ मनीष राव ने बधाई दी।

न्याय तक पहुंच राष्ट्रीय विधिक सेवा का उद्देश्य

महेंद्रगढ़। राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस 2025 की पूर्व संध्या के अवसर पर हारटोन स्किल सेंटर फॉर केंच्यूटर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग सतनाली मोड महाराणा प्रताप चौक के सभागार में आयोजित विधिक सेवा जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अधिवक्ता रेखा यादव ने समाज के कमजोर वर्गों को न्याय की पहुंच सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि न्याय सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होना चाहिए और निशुल्क कानूनी सेवाएं इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

ओलंपियाड में विद्यार्थियों ने दिमागी चोड़े दौड़ाए

महेंद्रगढ़। आरपीएस ग्रुप के पूरे देश में स्थित विद्यालयों में सातवें ओलंपियाड आरपीएस ओलंपियाड के द्वितीय चरण की परीक्षा का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में देशभर के छात्रों ने अपनी सुविधा अनुसार परीक्षा केन्द्रों का चयन कर सुबह 11 से 12 बजे तक परीक्षा दी। परीक्षा के दौरान सुबह से दोपहर तक सतनाली रोड पर वाहनों की भारी भीड़ के चलते जाम की सी स्थिति बनी रही। आरपीएस ग्रुप की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजीनियर मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव व प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने उज्वल भविष्य की कामना की।

निर्माण पूरा होने के बाद लोगों को मिलेगी पानी गुणवत्ता की रिपोर्ट, 170 गांवों की आबादी को होगा फायदा

हरिभूमि न्यूज ▶ महेंद्रगढ़



महेंद्रगढ़। जनस्वास्थ्य विभाग कार्यालय निर्माणधीन प्रयोगशाला। फोटो: हरिभूमि

जनस्वास्थ्य विभाग के कार्यालय परिसर में निर्माणाधीन जल परीक्षण प्रयोगशाला पांच माह में तैयार हो जाएगी। प्रयोगशाला का 65 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। सिर्फ 35 प्रतिशत कार्य बाकी है। प्रयोगशाला चालू होने से महेंद्रगढ़, सतनाली व कनौना के साथ 170 गांवों की आबादी को राहत मिलेगी। प्रयोगशाला बनने के बाद इन क्षेत्र के लोगों को पानी की जांच के लिए नारनौल नहीं जाना पड़ेगा। जल परीक्षण प्रयोगशाला पर विभाग की ओर से 65 लाख रुपये खर्च किए

थे, साथ ही उन्हें किराया खर्च करना पड़ रहा था। लोगों की मांग पर जनस्वास्थ्य विभाग ने गत वर्ष से ही शहर में लैब स्थापित कराने की प्रक्रिया शुरू की। योजना के अनुसार 65 लाख रुपये बजट पास होने पर विभाग की ओर से दिसंबर 2024 में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर एग्जेंसी को कार्य आवंटित किया और मार्च 2025 में प्रक्रिया पर काम शुरू हो चुका है। लैब चालू होने के बाद क्षेत्र के लोगों को नारनौल की भागदौड़ से राहत मिलेगी और समय की भी बचत हो होगी। इसमें आम लोग अपने घर से पानी के सैंपल लाकर जांच करवा सकेंगे।

जल परीक्षण प्रयोगशाला का 65 प्रतिशत कार्य पूरा, अगले साल तक बनकर तैयार होने की उम्मीद

65 लाख रुपये बजट पास होने पर विभाग की ओर से दिसंबर 2024 में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर एग्जेंसी को कार्य आवंटित किया और मार्च 2025 में प्रक्रिया पर काम शुरू हो चुका है।

लोगों को तुरंत मिलेगी पानी की गुणवत्ता की रिपोर्ट

शहर स्थित जनस्वास्थ्य विभाग के कार्यालय के परिसर के बनावे जा रही प्रयोगशाला में एक केमिस्ट कक्ष, एक रिपोर्ट रूम व एक लेबोरेटरी कक्ष बनाया जाएगा। इसमें सभी आधुनिक सुविधाएं मौजूद रहेंगी तथा लोगों को तुरंत पानी गुणवत्ता की रिपोर्ट दी जाएगी। शहर की करीब 80 हजार आबादी व 170 गांवों के जमीनीय को नजदीक ही जल गुणवत्ता की जानकारी मिल जाएगी। इससे लोगों को यह फायदा मिलेगा की पानी की गुणवत्ता कैसी है।

अगले साथ कार्य पूरा कर लिया जाएगा कार्य

विभाग नगरिकों को राहत देने के लिए तत्पर है, अगले साल तक पानी की गुणवत्ता की जांच के लिए लैब तैयार कर क्षेत्र के लोगों को लैब की सुविधा प्रदान कर दी जाएगी। अभी लैब का निर्माण कार्य जारी है, जिसे अगले साल मार्च तक पूरा कर लिया जाएगा।
— सुरेंद्र यादव, जेई, जनस्वास्थ्य विभाग महेंद्रगढ़।

रेवाड़ी रोड स्थित एक होटल में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित

व्यापार मंडल से मेरा पुराना नाता रहा: पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश

हरिभूमि न्यूज ▶ नारनौल

संगठन के विस्तार एवं मजबूती के उद्देश्य से शनिवार को रेवाड़ी रोड स्थित अपार होटल में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिला प्रधान वैद्य किशन वशिष्ठ की अध्यक्षता में शहर इकाई की घोषणा की गई। शहर इकाई को जैबो कार्यकारिणी का आकार दिया गया है, जिसमें एक प्रधान के अलावा नौ उपप्रधान तथा अनेक पदाधिकारी नियुक्त किए गए हैं। इस बैठक में पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव बतौर मुख्यातिथि पहुंचे तथा व्यापारियों को संबोधित किया।

व्यापार मंडल का उद्देश्य व्यापारियों की एकजुटता व संगठन को सक्रिय करना



नारनौल। व्यापारियों को संबोधित करते पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव। फोटो: हरिभूमि

सक्रिय बनाना है। उन्होंने कहा कि संगठन का उद्देश्य व्यापारी हित के काम करना है। चाहे व्यापारियों की सुरक्षा का मामला हो या कोई हानि होने पर आर्थिक सहायता का कदम हो। व्यापार मंडल हर काम को बढ़-चढ़कर करेगा, जिसमें व्यापारियों की भलाई होती है। इसके लिए चाहे उन्हें कितना भी संघर्ष करना पड़े, अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़े, वह हमेशा आगे ही आगे खड़े तैयार मिलेंगे। इस मौके पर पहुंचे पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव ने कहा कि व्यापार मंडल से

शहर कार्यकारिणी घोषित

शहर कार्यकारिणी में संजय गर्ग को प्रधान, अजय गुप्ता, दीपक बंसल, गोपाल मित्तल, जयप्रकाश, कृष्ण कुमार यादव, जगदीश किंगर, महावरी जैन, विनोद सराफ, सुधीर यादव को शहरी उपप्रधान, प्रदीप संधी को कार्यकारिणी सदस्य, विनोद सोनी एवं पूर्णचंद्र सिंघल को शहरी महामंत्री, संजय मित्तल, ओमप्रकाश यादव एवं अनिल गोयल को शहरी महासचिव, अमित गर्ग, भारत जौहरी, देवेन्द्र नूलीवाला एवं हरदीराम सैनी को शहरी सहसचिव बनाया गया। इसी प्रकार मौजू, अजय संधी, तरणजीत सिंह, संदीप जैन, संजय सिंघल, मनीष आरक्षण, रोहतास सैनी, गर्वेश वर्मा, अनुप गोयल, देवेन्द्र सैनी, केशव सोनी, हिमांशु सोनी, दीपक वर्मा व मौजू नरुला को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में शामिल किया गया है।

यह रहे मौजूद

कार्यक्रम में संरक्षक लाला सत्यनारायण गुप्ता, संरक्षक धर्मचंद्र खड्डा, संरक्षक सरदार बलदेव सिंह चहल, माकेंट कमेटी के पूर्व चेयरमैन जेपी सैनी, दीपक शांडिल्य एवं रेवाड़ी पेट्रोल पंप प्रधान सुंदर लाल यादव आदि समेत अनेक गणमान्य व्यापारी मौजूद थे।

उपप्रधान सुरेंद्र चौधरी ने की तथा नए पदाधिकारियों को मंच से पटक एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। सबसे पहले जिला कार्यकारिणी में बतौर कानूनी सलाहकार सम्मिलित किए

ए एडवोकेट राजकुमार यादव, जिला उपाध्यक्ष राकेश कुमार यादव एडवोकेट, रोहतास अग्रवाल तथा जिला महामंत्री राजेश चौधरी को सम्मानित किया गया।

एक राष्ट्र, एक चुनाव एवं पंच परिवर्तन विषय पर संगोष्ठी आयोजित

प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा का देशी अंदाज में स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶ महेंद्रगढ़



महेंद्रगढ़। ट्रेक्टर घलते प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा जाट पाली में एक राष्ट्र, एक चुनाव एवं पंच परिवर्तन विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक तथा क्षेत्र के अनेक सामाजिक कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्यातिथि व मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव व विवि कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार रहे। फणींद्रनाथ शर्मा ने एक राष्ट्र,

मौजूद रहे

इस अवसर पर को कोऑपरेटिव बैंक चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, जिला भाजपा महिला मंत्री डॉ. अर्चना ठाकुर, प्रो वीसी आनंद शर्मा, प्रदेश पेनरिस्ट राकेश शर्मा, युवा मोर्चा प्रदेश टीम से सन्नी नाय, प्रसन्नता, नवीन शर्मा, सिकंदर, मंजीत यादव व शिक्षकगण, विद्यार्थी व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

एकसाथ चुनाव कराने से न केवल संसाधनों की बचत होगी, बल्कि शासन व्यवस्था अधिक स्थिर और पारदर्शी बनेगी व वोट डालने वाले मतदाताओं की संख्या भी बढ़ेगी। विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि आज का युवा कल का भविष्य है। परिवर्तन की शुरुआत युवा से ही होती है।

12 नवंबर को पीर बाबा की कव्वाली, हिंदू-मुस्लिम एकता का देंगे संदेश

किन्नर समाज 11 नवंबर को करेगा माता जागरण

कोलकाता के मजन गायक संजय मितल मजनों के माध्यम से माता का गुणगान करेंगे

हरिभूमि न्यूज ▶ नारनौल

मंगलमुखी किन्नर समाज की ओर से हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक दो दिवसीय माता का जागरण व पीर बाबा की कव्वाली का आयोजन 11 व 12 नवंबर को मोहल्ला कोलियान में किया जाएगा। इन दोनों कार्यक्रमों में जाने-माने भजन गायक व



आयोजित कराता है। इसके पीछे का मुख्य कारण सबकी मंगलकामना करना तथा समाज में भाईचारा कायम रखना है। उन्होंने बताया कि पूरे समाज की मंगलकामना के लिए 11 नवंबर रात को मां भवानी का

जागरण होगा। इस जागरण में मुख्य रूप से कोलकाता के विश्वविख्यात भजन गायक संजय मितल अपने भजनों के माध्यम से माता की महिमा का गुणगान करेंगे। वहीं उनके साथ उज्जैन से आरती सिंह

12 को होंगी कव्वाली

इसी प्रकार दूसरे दिन 12 नवंबर को सुबह 11 बजे से पीर बाबा की कव्वाली का आयोजन किया जाएगा, जिसमें फैजान अजमेरी, जयपुर से इदरिश कादरी, मुंबई से नरसीम प्रवीण व इंदी से जुनेद-जुवेद वारसी आएंगे। उन्होंने बताया कि इसी दिन सुबह से मंडारे का भी आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर किन्नर समाज की गुरु मा महक भी मौजूद रही।

राजपूत, देहरादून से सन्नी साईं, पटियाला से टोनी राजन व अमित माही भी आएंगे। कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर समाज के लोगों से संपर्क किया जा रहा है।

खबर संक्षेप

यदुवंशी कॉलेज के विद्यार्थियों ने जिला युवा उत्सव में परचम लहराया

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने सभागार भवन में आयोजित जिला युवा उत्सव 2025 में अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के युवा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। यदुवंशी कॉलेज की छात्रा मानवी ने विद्यालय मॉडल में द्वितीय स्थान व पोस्टर मैकिंग में यदुवंशी कि टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य बजरंग लाल ने कहा कि युवावस्था जीवन का स्वर्णिम काल है, जिसमें सही दिशा और सकरात्मक सोच के साथ किया गया।



एसडी स्कूल के विद्यार्थी निकले दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण पर

कनौना। एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला ने अपने शैक्षिक केंद्र पर आयोजित विद्यार्थियों को दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए रवाना किया। इस दल में लीवी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थी शामिल हैं। जो गुलाबी नगरी जयपुर पहुंचेंगे। विद्यार्थी वहां पर आमेर फोटो सहित आधुनिक व पुरातन संस्कृति से रूबरू होंगे। जयपुर में आमेर का किला, जयवाड़ का किला, जल महल, जंतर-मंतर, राजमंदिर सिनेमा हॉल, सीटी पेलस, हवा महल, बिड़ला तारामंडल, बिड़ला मंदिर, एल्बर्ट हॉल सहित अन्य दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करेंगे।



सांसद खेल महोत्सव में इंडस वैली स्कूल वॉलीबाल में रही प्रथम

महेंद्रगढ़। आदर्श ग्राम दौड़गा अहीर में दिवस पर सांसद खेल प्रतियोगिता का आयोजन सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह के दिशाबिंदूशुभारुण जिला प्रशासन की तत्पर से दौड़गा अहीर खेल स्टेडियम में किया गया। इस अवसर पर वॉलीबॉल, कबड्डी, कुश्ती, रेस, लॉन्ग जम्प, हाई जम्प, रस्स कस्ती आदि खेलों का आयोजन किया गया। इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौड़गा अहीर टीम ए ने वॉलीबॉल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर डैरेली अहीर व तृतीय स्थान पर इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौड़गा अहीर की टीम भी रही।

खबर संक्षेप



फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर दिए निर्देश

रेवाड़ी। डीसी अभिषेक मीणा ने शनिवार को फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर लघु सचिवालय में अधिकारियों को बैठक में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन के लिए त्रि-आयामी रणनीति अपनाई है, जिसमें पराली का इन-सीटू, एक्स-सीटू और पशु चारे के रूप में उपयोग शामिल है। उन्होंने कहा कि अधिकारी किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जागरूक करते हुए त्रि-आयामी रणनीति का उपयोग कराएं। इससे बढ़ते वायु गुणवत्ता प्रबंधन को लेकर हरियाणा के मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस से प्रदेश के सभी डीसी और अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हरियाणा अगले दो साल में पराली जलाने की समस्या जड़ से



ओलंपियाड परीक्षा का हुआ आयोजन

कोसली। आरपीएस स्कूल कोसली में शनिवार को ओलंपियाड परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा में कक्षा पहली से दसवीं तक के हजारों विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आरपीएस ग्रुप की चेरपरसन डा. पवित्रा राव, सीईओ इंजीनियर मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुणाल राव व कोसली स्कूल के मेनेजमेंट मेंबर श्रीभगवान यादव, हंसराज यादव तथा प्राचार्या अंजू यादव ने सभी विद्यार्थियों को परीक्षा की बधाई दी। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विज्ञान, गणित, अंग्रेजी, कंप्यूटर व सामान्य ज्ञान विषयों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या ने किया। इस मौके पर प्राचार्या ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं के लिए तैयार करते हैं और उनमें आत्मविश्वास का संचार करते हैं।



रोहिग्या व बांग्लादेशी की पहचान को चलाया अभियान

धारूहेड़ा। जिला पुलिस व स्वेत टीम ने शनिवार को थाना धारूहेड़ा व सेक्टर-6 धारूहेड़ा क्षेत्र में अनाधिकृत रूप से रहने वाले रोहिग्या व बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान के लिए सच अभियान चलाया। अभियान के दौरान पुलिस टीम ने झुग्गी-झोंपड़ियों, होटल, पोस्ट्री फार्म व अन्य संदिग्ध स्थानों पर जांच की। पुलिस टीम ने बाहरी अभियानों की भी जानकारी ली तथा उनके पहचान पत्र भी जांचे। इसके साथ ही पुलिस ने वाहनों के कागजातों की भी जांच की। एसपी हेमंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले अनाधिकृत रूप से किसी को भी रहने की छूट नहीं है। जिले में जो भी लोग बाहर से आकर रह रहे हैं, उनकी पहचान होना अत्यंत आवश्यक है। सुरक्षा की दृष्टि से यह कदम उठाए जा रहे हैं।

अविश्वास प्रस्ताव को लेकर बैठक 21 को

रेवाड़ी। पंचायत समिति धारूहेड़ा के अध्यक्ष दलबीर सिंह के विरुद्ध प्राप्त अविश्वास प्रस्ताव को लेकर जिला सचिवालय के कमरा नंबर 202 ए में 21 नवंबर को सुबह 10 बजे बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक में पंचायत समिति धारूहेड़ा के सभी सदस्यों की बैठक बुलाने का निर्णय लिया गया है। एडीसी राहुल मोदी ने हरियाणा पंचायती राज अधिनियम 1944 की धारा 62 व हरियाणा पंचायती राज नियमावली 1995 के नियम 10(3) में निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए बैठक बुलाने का निर्णय लिया है।

विधायक लक्ष्मण सिंह व आईजीयू के रजिस्ट्रार प्रो. दिलबाग सिंह ने विजेताओं को किया पुरस्कृत

जोनल यूथ फेस्टिवल में आईजीयू मीरपुर बना ओवरऑल विजेता, केएलपी रहा रनरअप

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर के तत्वावधान में केएलपी कॉलेज में चल रहे तीन दिवसीय जोनल यूथ फेस्टिवल 'अनुगुंज' का शुक्रवार देर रात्रि समापन हो गया। तीन दिवसीय यूथ फेस्टिवल इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर ओवरऑल विजेता रहा, जबकि रनरअप ट्राफी पर केएलपी कॉलेज ने कब्जा किया। मुख्यातिथि विधायक लक्ष्मण सिंह यादव तथा समाजसेवी अशोक सोमानी ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किए। इस मौके पर आईजीयू के रजिस्ट्रार प्रो. दिलबाग सिंह तथा अमरेंद्र चौहान विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता बृजलाल गोयल ने की।

तीन दिवसीय युवा महोत्सव में 21 महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने 7 मंचों पर आयोजित 46 प्रतिस्पर्धात्मक एवं गैर-प्रतिस्पर्धात्मक इवेंट में भाग लिया। नृत्य, संगीत, नाटक, साहित्य और ललित कला की मनमोहक प्रस्तुतियों ने पूरे परिसर को संस्कृति, सृजनशीलता और युवा ऊर्जा के रंगों से सराबोर किया। कॉलेज प्रबंधकारिणी के अध्यक्ष रिपुदमन गुप्ता, उपाध्यक्ष संदीप खंडेलवाल, महासचिव अरविंद गुप्ता, कोषाध्यक्ष उषा रस्तोगी एवं प्राचार्य डा. कविता गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि युवा उत्सव विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, नेतृत्व और टीम भावना का अमूल्य पाठ सिखाते हैं। यह कार्यक्रम युवाओं को अपनी संस्कृति, कला और भाषा से जोड़ते हुए उनके सर्वांगीण विकास का माध्यम बनते हैं। रिपुदमन गुप्ता ने कहा कि अनुगुंज केवल एक सांस्कृतिक महोत्सव नहीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के समर्पण, एकता और सृजनशीलता का प्रतीक है। उन्होंने प्राचार्य, आयोजन समिति और समस्त स्टाफ के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। प्राचार्य डा. गुप्ता ने सभी निर्णायकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।



युवा महोत्सव में ग्रुप डांस करते हुए छात्राएं



युवा महोत्सव में मौजूद विधायक व अन्य अतिथि



जोनल युवा महोत्सव की विजेता आईजीयू की टीम

खास बातें

- केएलपी कॉलेज में तीन दिन चले युवा महोत्सव का देर रात हुआ समापन
- तीन दिवसीय युवा महोत्सव में 21 महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने 7 मंचों पर आयोजित 46 प्रतिस्पर्धात्मक एवं गैर-प्रतिस्पर्धात्मक इवेंट में भाग लिया
- विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि युवा उत्सव विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, नेतृत्व और टीम भावना का अमूल्य पाठ सिखाते हैं
- युवा महोत्सव के अंतिम दिन पारंपरिक नृत्य, शॉर्ट फिल्म, भाषण, रंगोली और पोस्टर मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
- स्टेज दो पर हरियाणवी शॉर्ट फिल्म का प्रदर्शन हुआ।

युवा महोत्सव के अंतिम दिन हुए इवेंट

युवा महोत्सव के अंतिम दिन पारंपरिक नृत्य, शॉर्ट फिल्म, भाषण, रंगोली और पोस्टर मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। स्टेज एक पर पारंपरिक अनुष्ठान, शास्त्रीय नृत्य और लोक-जनजातीय नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। स्टेज दो पर हरियाणवी शॉर्ट फिल्म का प्रदर्शन हुआ। स्टेज तीन पर हिंदी और अंग्रेजी वाकित्ता प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा स्टेज पांच पर रंगोली और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। तीन दिवसीय यूथ फेस्टिवल इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर ओवरऑल विजेता रहा, जबकि रनरअप ट्राफी केएलपी कॉलेज ने जीती। युवा महोत्सव का आयोजन सचिव डा. खिंदू अरोड़ा ने अपनी संबन्धनात्मक क्षमता, समर्पण और दूरदृष्टि से तीनों दिनों के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालन कराया। प्रबंधकारिणी अध्यक्ष रिपुदमन गुप्ता ने जोनल यूथ फेस्टिवल के सफल आयोजन में अपने निरंतर सहयोग और परिश्रम के लिए शिक्षण एवं गैरशिक्षण स्टाफ का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर आईजीयू से डीवाईडब्ल्यू डा. अदिति, एडवाईडब्ल्यू डा. सुशांत यादव, नवीन पिपलानी, डीडीपीओ हरिप्रकाश बंसल, सतीश स्कूल के वेयरमैन अनिल रस्तोगी, आईजीयू से डीवाईडब्ल्यू डा. करण सिंह, विनयशैल गोयल, रतनलाल कसेरा, कॉलेज के पूर्व प्रधान अमित गुप्ता, मोहनलाल, अजय यादव, कपिल यादव, प्रदीप तनेजा, आनंद स्वप्न डाटा, दीपक यादव, अधिवक्ता सचिव मालिक, सुनील गोवर व हेमंत कुमार सहित जूरी मेंबर्स, केएलपी कॉलेज के सभी शिक्षण एवं गैरशिक्षण स्टाफ व अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।



पेंटिंग प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्रा



रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्रा



गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं ने यूथ फेस्टिवल में जीते 12 पुरस्कार, कॉलेज में हुआ सम्मान

रेवाड़ी। सेक्टर-18 स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने केएलपी कॉलेज में सम्पन्न हुए जोनल यूथ फेस्टिवल अनुगुंज में सफलता का परचम लहराते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। कॉलेज की छात्राओं ने 15 प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए 12 प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीता है। शनिवार को प्राचार्या डा. ज्योति यादव ने सभी विजेता छात्राओं को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय शिक्षा के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी शानदार प्रदर्शन कर रहा है। कॉलेज की सांस्कृतिक गतिविधियों की इंचार्ज डा. राजेश कुमारी, डा. शर्मिला, लिटरेरी गतिविधियों के इंचार्ज डा. अनीता, डा. ज्योति, डा. रेखा, फाइन आर्ट्स के इंचार्ज डा. रीतू चौधरी, पूनम, डा. शिवानी, विज्ञान के प्रथम स्थान प्राप्त किया। हरियाणवी कविता पाठ में मधु, हिंदी एलोवयूशन में काजल, इंग्लिश एलोवयूशन में काजल तथा काट्टीनिंग में हनी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। हिंदी कविता पाठ में चांदनी व पंजाबी कविता पाठ में पूजा ने तृतीय स्थान तथा कोलाज मेकिंग में चंचल ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। अब ये सभी विजेता छात्राएं इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर में होने वाले अंतरराष्ट्रीय युवा महोत्सव में रेवाड़ी जेन का प्रतिनिधित्व करेंगी।

आईजीयू में दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का समापन

मीरपुर। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में स्थापित महाराजा अग्रसेन पीठ एवं वाणिज्य विभाग के की ओर से कर्मचारियों की क्षमता विकास के लिए आयोजित की गई दो दिवसीय कार्यशाला का शनिवार को समापन हो गया। समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डायरेक्टर ऑफ हरियाणा स्टेट ऑडिट चंडीगढ़ राजेश गुप्ता थे, जबकि विवि के कुलसचिव प्रोफेसर दिलबाग सिंह एवं अधिष्ठाता शैक्षणिक मामलों प्रोफेसर सुनील कुमार विशिष्ट अतिथि थे। कार्यशाला में कर्मचारियों से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे सर्विस रूल, मेडिकल क्षतिपूर्ति, इनकम टैक्स की रिटर्न फाइल करना, विश्वविद्यालय एवं हरियाणा सरकार का विभागीय परचेज प्रोसीजर पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। दूसरे दिन के सत्र का आरंभ चार्टर्ड अकाउंटेंट सुधीर यादव ने किया, जिन्होंने आयकर रिटर्न फाइल करने के संबंध में कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। दूसरे सत्र में हार्टफुलनेस मैनेजमेंट टीम की ओर से ज्ञान का अन्वेषण कराया गया। पोस्टमन बिजनेस स्कूल झरका से डा. रुचिका यादव, कंचन गुप्ता, अतुल यादव व वीणा सिंह ने सभी कर्मचारियों को ज्ञान का अन्वेषण कराया।



आईजीयू में दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का समापन

राष्ट्रगीत देश की एकता, संस्कृति और गौरव का प्रतीक : बलवान सिंह

कुंड। राठ इंटरनेशनल स्कूल कुंड में राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगीत के सामूहिक गायन से हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के वेयरमैन बलवान सिंह यादव ने कहा कि राष्ट्रगीत हमारे देश की एकता, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है। उन्होंने छात्रों से आवाह किया कि वे अपने जीवन में राष्ट्रप्रेम और अनुशासन को अपनाएं। सेकेंड्री निवेश यादव ने कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों में देशभक्ति की भावना और अधिक प्रशल होती है। डायरेक्टर शिवानी यादव ने राष्ट्रगीत के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला और छात्रों को अपने देश के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। एकेडमिक डायरेक्टर रविंद्र तंवर ने कहा कि राष्ट्रगीत हमें एकता और सद्भावना की शिक्षा देता है। एकेडमिक डीन प्रियंका यादव ने कहा कि बच्चों को अपने देश के गौरवशाली इतिहास को जानना और सम्मान देना चाहिए। प्रधानाचार्य पवन यादव ने कहा कि राष्ट्रगीत हमारे अंदर देश के प्रति गर्व की भावना जगाता है। इस अवसर पर कोऑर्डिनेटर आशा यादव, निशा यादव व ज्योति यादव सहित विद्यालय के सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हेडमिस्ट्रेस शिपा सांडिल्य ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ किया गया।

बोले विधायक अनिल यादव

कोसली के विधायक अनिल यादव ने बताया कि युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय मेरा भारत के माध्यम से विकसित भारत पदयात्राएं आयोजित कर रहा है। इस पहल का उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीय गौरव जगाना, समाज के प्रत्येक जिम्मेदारी बढ़ाना और एकता की भावना को मजबूत करना है। माय भारत के जिला युवा अधिकारी निरयानंद यादव ने बताया कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में स्कूलों में भी जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। वहीं पदयात्राओं के दौरान भी योग, स्वास्थ्य जांच शिबिर लगाने के साथ साथ नशा मुक्त भारत जैसे जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पदयात्रा में भाग लेने वाले इच्छुक युवा माय भारत पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। इस अवसर पर भाजपा महामंत्री हिमांशु पालीवाल, महामंत्री कुलदीप चौहान, जिला उपाध्यक्ष प्रवीण शर्मा, महिला मोर्चा उपाध्यक्ष नीतू चौधरी, विनीता पीपल, गौरव शर्मा, जिला संयोजक अर्जुन, अजय और विनय मौजूद थे।

न्यूज डायरी



गवर्नमेंट कॉलेज ने जोनल यूथ फेस्टिवल में लहराया परचम

कोसली। कोसली राजकीय महाविद्यालय ने केएलपी कॉलेज में आयोजित हुए जोनल यूथ फेस्टिवल में अपनी प्रतिभा, सृजनशीलता और अनुशासन प्रदर्शन से सभी का ध्यान आकर्षित किया। महाविद्यालय की सांस्कृतिक टीम ने 11 प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर क्षेत्रीय स्तर पर कॉलेज का नाम रोशन किया। ऑन द स्पॉट पेंटिंग और कोलाज मेकिंग प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने कल्पनाशक्ति, रंग संयोजन और कलात्मक दृष्टि के बल पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। पोस्टर मेकिंग और फेशन शो फीमेल प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इंग्लिश डिबेट मोशन और माइड में विद्यार्थियों ने तृतीय स्थान हासिल किया। हिंदी इलोवयूशन, किचपट कोरियोग्राफी, इंग्लिश डिबेट मोशन विरुद्ध, पंजाबी कविता पाठ तथा पण्ड्री बांधो प्रतियोगिताओं में भी विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। कॉलेज की प्राचार्या डा. लाज कोशल ने इस सफलता पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमारी डा. निशा एवं पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि महाविद्यालय की यह टीम आगामी इंटर-जोनल स्तर पर भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन करेगी। इस अवसर पर प्रोफेसर मंजोत कुमार, नागेश कुमार, संजीव कुमार, प्रीतम, रेवू व नीलम उपस्थित थे।



विधायक को मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

रेवाड़ी। मेघवाल उद्योग समिति की ओर से शनिवार को मुख्यमंत्री नाबख रैनी के नाम बावल विधायक डा. कृष्ण कुमार को ज्ञापन सौंपा गया। समिति ने अनुसूचित जाति के लिए मेघवाल शब्द को प्रतिस्थापित करने की मांग की। समिति के सदस्यों ने कहा कि जातिगत नामों में परिवर्तन से समुदाय के सदस्यों में आत्मसम्मान की भावना जागृत होगी तथा सामाजिक धक्काधक्का को बढ़ावा मिलेगा। ज्ञापन वेद प्रकाश रिटायर्ड एसडीओ संरक्षक मेघवाल उद्योग समिति के नेतृत्व में सौंपा गया। इस मौके पर सूरजभान प्रिंसिपल प्रधान, सचिव भूपेन्द्र शेखपुर मेघवाल, अशोक मेघवाल सहसचिव, देवेन्द्र पाल धामलाका, परमेश्वर दयाल प्रमारी बावल, भगत सिंह संभरिया अध्यक्ष सेवा स्तंभ, सुबेदार रमेशचंद्र प्रधान बावल, महेंद्र सिंह मेघवाल, सुजान सिंह मेघवाल, सावंत सिंह, हीरा सिंह वैद्य, लालचंद फोरमेल, इश्वर सिंह, नास्टर राहुल मेघवाल, मानसिंह, अजय सिंह, रवींद्र, भगवान राम, एडवोकेट उमेश मेघवाल, सतीश कुमार, शुभराम, इंदर सिंह, जगदीश चौधरी, शुभम, भगवान दास, बलबीर सिंह, रामनिवास गोवाल, प्रहलाद सिंह, लालचंद, रामनिवासर मेश, साम्भरिया, उदय पाल साम्भरिया, शेर सिंह, रामकिशन, भूप सिंह सरपंच भट्टसावा, बलबीर सिंह व इश्वर सिंह उपस्थित थे।



ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों व साइबर अपराध से सतर्क रहने को लिए किया जागरूक

रेवाड़ी। जिले को नशामुक्त बनाने के लिए निरीक्षक रामपाल के नेतृत्व में गठित पुलिस की नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को गांव मनेठी, पाडला व कुंड में ग्रामीणों व युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर पुलिस टीम ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को खर्बा करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। युवा देश का भविष्य है, सभी को पढ़ाई, खेल और अपने सपनों में ध्यान लगाकर नशे जैसी बुरी आदतों से हमेशा दूर रहना चाहिए। पुलिस टीम ने कहा कि नशा शरीर ही नहीं, बल्कि जीवन और समाज के लिए भी जरूर है। पुलिस टीम ने ग्रामीणों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। वर्तमान में अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी व पासवर्ड आदि हासिल करने की कोशिश करते हैं।

रेवाड़ी व कोसली में निकाली जाएंगी पदयात्राएं

पटेल जयंती के उपलक्ष्य में 25 तक होंगे कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज | रेवाड़ी

सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में रन फॉर यूनिटी के बाद मेरा युवा भारत तथा जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में जिले में दो पदयात्राएं रेवाड़ी और कोसली में निकाली जाएंगी। इन पदयात्राओं के आयोजन को लेकर मेरा युवा भारत की ओर से शनिवार को पीडब्ल्यूडी रस्त हाउस में बावल के विधायक डा. कृष्ण कुमार और कोसली के विधायक अनिल यादव की अध्यक्षता में प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दोनों विधायकों ने सरदार@150 यूनिटी मार्च के लिए तैयार की गई टी शर्ट भी लॉन्च की। इस मौके पर बावल के विधायक डा. कृष्ण कुमार ने कहा कि लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बिखरे हुए भारत को एक सूत्र में पिरोकर अखंड भारत का स्वरूप दिया। सरदार पटेल का अडिग



रेवाड़ी। पीडब्ल्यूडी रस्त हाउस में प्रेसवार्ता करते विधायक।

फोटो : हरिभूमि

विश्वास था भारत एक है, अखंड है और भारत सदा सर्वदा अखंड ही रहेगा। इसी विश्वास के साथ आज विकसित भारत 2047 के संकल्प भारत को एक सूत्र में पिरोकर अखंड भारत का स्वरूप दिया। सरदार पटेल का अडिग

पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 25 नवंबर तक पूरे देशभर में पदयात्राएं और जागरूकता कार्यक्रम कराए जा रहे हैं। जिला के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सरदार वल्लभ भाई

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियाँ हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य



कवर स्टोरी लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को संरक्षित करना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल ईसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप ईसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने

आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खूला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अर्धेड भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बॉक्सा होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जायेंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर-एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियाँ हैं, जिन्हें शापद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके तनाव को लेकर सहजगति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैक्यू एडिक्शन करने की क्षमता जाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भी अधिक प्रतियोगिता करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत लोकप्रिय बहल जायेंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी किरियरिटी और कोलेजेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।



गजल प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर दबी दिखने लगा है श्रम-कल श्रमिक के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निगता है मुसीबत छठ दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना ये रूम परिवार के अंदर है या बाजार के अंदर

दस रिश्तों की रिश्तकी पर है कितने कीमती परदे घुनन मरुसत लेती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शौरी के जैसे मत समझ लेना बहुत घुमता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत लेते हैं ये मजबूरी के कांथे भी जो पूरा गांव दो कर रख गए बाजार के अंदर

मोबाइल का बवाल

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बड़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप लोग बहुत नाराज हुए थे।

उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दे या मोबाइल? *

लसुक्या / बालकृष्ण गुप्ता 'गुठ'

बड़ा आदमी

हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बढ़े बने हो।' राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।' 'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूँढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।' राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूँगा?' 'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम

विशेष: बाल दिवस 14 नवंबर

बच्चों के बीच न पने असमानता
डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर ईसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर ईसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाया भी सफल होगा। *



बचपन से किशोरावस्था तक बच्चों के जीवन में सबसे बड़ी भूमिका पैरेंट्स और टीचर्स की होती है। ऐसे में बच्चों के बेहतर, तनावरहित और उज्ज्वल भविष्य के लिए दोनों को उनकी जरूरतों और समस्याओं को गंभीरता से समझना होगा।

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकता: जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम गैरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को

करीब 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है। आज के बच्चे 'डिजिटल नेटवर्क' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डॉटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए। समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी

की मन-स्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीक के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने ढांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है।

आज के बच्चे 'डिजिटल नेटवर्क' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डॉटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी

बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में दूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएँ तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मन:स्थिति: आज के बच्चों

की मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इख्ती) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

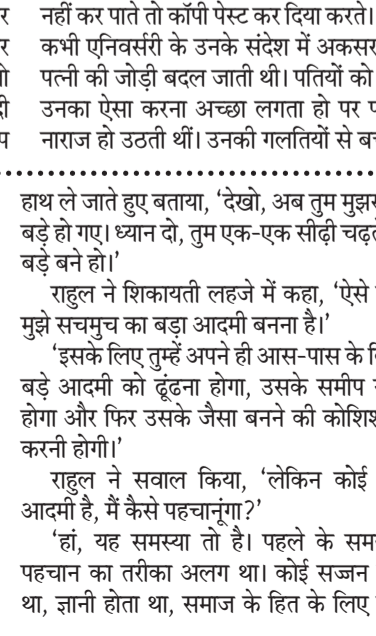
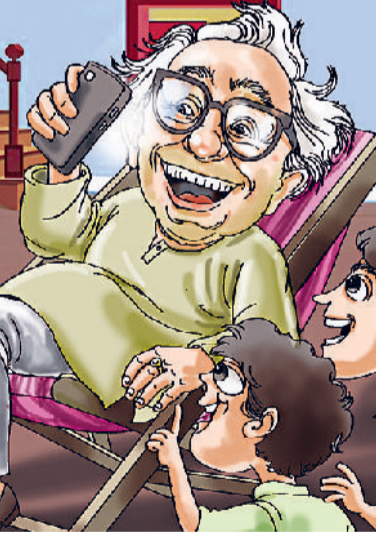
जी लेने दें बच्चों को बचपन: आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रचियों के मुताबिक जीने और बचपन का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपन की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती है 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व खी की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दौलत प्रेम की अनूठी बानी है। कह डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हेरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचर्चा खी के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गमाहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिपलती बर्फ', 'जो ले जा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तक: पा की डायरी (कहानी संग्रह), लेखिका: आशा शर्मा, मूल्य: 260 रुपये, प्रकाशक: समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली



सेलिब्रेशन / शिक्षर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अजोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेन्स-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन्स-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

गोगात्सु-निग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेल्मेट है, जो अक्सर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुडिया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोडोमोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं।

जापानी में, कोडो का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार का मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ऑलिंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।



कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेवकु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और



दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्बार्तो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया

जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिडियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए



अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का फैसला किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारों भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।



जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगा ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों

के स्ट्रप्स), सोलोगैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुप्त भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एतोंग जि ए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा



है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।



इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है।



बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव धौज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो



होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है। सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रिकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।



सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने, रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वचुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतर्ग तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है।

गाइडेंस कीर्तिरेखर

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्टीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्टीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

सिने टैंड / डी. जे. नंदन

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पट्टा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सबसेसफल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी



समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम रिस्कल डेवलपमेंट, इंटरनेटिंग या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।



युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्मों में कमाई के मामले में कमाल कर जाती। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन



'सैयारा' को मिली शानदार सफलता कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो भी मतलबालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोटे की 'डमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टार फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।



साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा' ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है। तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'डूंगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी मामले में कमाल कर जाती। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन



मलयालम में बनी फिल्म 'शुडारम' ने बॉक्स ऑफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुद्धा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की। तेलुगु भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वरुधुम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की। दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचें और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक देते हैं कि वे स्टार पावर के अलावा फिल्मों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं।

लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक देते हैं कि वे स्टार पावर के अलावा फिल्मों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं।



'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन